study time
Page No.:
Date : / /

आधुनिक भारतीय समाज के लिए प्राचीन शिक्षा की उपयोगिता →

आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ। आधुनिक शिक्षा गुणात्मकता की अपेक्षा परिणात्मक अधिक दिखाई देती है। वर्तमान युग में गुरु - शिष्य सम्बंध अत्यधिक शुष्क व नीरस है। विद्यालयों, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में सर्वत्र अनुशासनहीनता तथा चरित्रहीनता व्याप्त है।

1- **आदर्श मानवता →** प्राचीन काल की शिक्षा मानव को आदर्श मानव बनाने वाली थी। तत्कालीन शिक्षा, नम्रता, परोपकार, सत्यवचन, आध्यात्मिक, पारस्परिक स्नेह आदि मानवीय गुणों पर बल देती थी। इन गुणों की वर्तमान युग की शिक्षा में भी परम आवश्यकता है।

2- **आध्यात्मिक के प्रति आस्था →** वर्तमान युग की शिक्षा विज्ञान, तकनीकी, उद्योग, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में मानव को आगे बढ़ाती है। इस प्रकार की शिक्षा ने मानव को भौतिकवादी अधिक बना दिया है। प्राचीन काल की शिक्षा आध्यात्मिकता के प्रति आस्था उत्पन्न करने वाली थी। धर्म, कर्म, ईश्वर, नैतिकता, अहिंसा आदि को समझने में प्राचीन शिक्षा सहायक बनती थी।

Scanned with CamScanner

3- आदर्श एवं मधुर गुरु-शिष्य सम्बंध → आधुनिक युग में गुरुओं के प्रति शिष्यजन ईर्ष्या, वैमनस्य तथा कटुतापूर्ण व्यवहार करते थे। आज तो गुरुओं का घेराव भी किया जाता है। कभी कहीं हिंसा का वातावरण भी बन जाता है। यह तनावपूर्ण एवं दोषपूर्ण वातावरण गुरु-शिष्य सम्बंधों की कटुता तथा अनुपयुक्तता का ही परिणाम है।

4- प्रकृति का सुखद वातावरण → गुरुकुल या अन्य शिक्षण संस्थाएँ ऐसे वातावरण में स्थित होते थे जहाँ नगरीय कोलाहल नहीं होता था। इस प्राकृतिक वातावरण का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व पर भी पड़ता था। उस समय के छात्र नम्र, शान्त स्वभाव, उदार प्रकृति प्रेमी होते थे। वर्तमान युग के विद्यालयों में यदि प्राकृतिक सौन्दर्य को लाने का प्रयास किया जाये, विद्यालयों को नगर के कोलाहल से दूर शान्त वातावरण में अवस्थित किया जाये तो विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों के व्यक्तित्व में भी महान अन्तर आ सकेगा।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

5- **छात्रों का सादा जीवन उच्च विचार** → प्राचीन काल के छात्र सादा जीवन व्यतीत करने तथा संयम से रहने वाले आदर्श मानव होते थे। उनका चरित्र एवं व्यवहार सचमुच ही अनुकरणीय होता था। आधुनिक युग के शिक्षार्थियों में सादा जीवन, उच्च विचार, संयम, ब्रह्मचर्य व्रत आदि श्रेष्ठ बातों को सीखने की स्पर्धा होनी चाहिए। प्राचीन काल के शिक्षार्थी अर्धनग्न, यज्ञोपवीतधारी, नंगे पैर, सिर मुड़े तथा मस्तक पर तिलक लगाये हुए आजकल के फैशनपरस्त, व्यसनी तथा संयमहीन छात्रों की अपेक्षा कहीं अधिक चरित्रवान तथा विद्वान होते थे। आधुनिक युग में उन गुणों की पुनप्राप्ति की अत्यन्त आवश्यकता है।

6- **विद्यालयों का नियंत्रण** → आधुनिक युग के विद्यालयों में अनेक प्रकार के संगठनों का हस्तक्षेप होता है राज्य तथा केन्द्रीय सरकार के अतिरिक्त जनता के बीच से चुने हुए प्रबंधक विद्यालयों को अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति समझते है। कभी-2 तो निरक्षर प्रबंधक उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षकों तथा प्राचार्यों को पशुओं की तरह हाँकता हुआ देखा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

7- उपयुक्त विषयों का चयन → आधुनिक युग की शिक्षा के पाठ्यक्रमों में ऐसे विषयों पर अधिक ज्ञान आकर्षित नहीं किया जा रहा है जो छात्रों में राष्ट्रीयता या नैतिकता की भावना को भर सके। विज्ञान तथा तकनीकी जैसे विषयों का अध्ययन करना, आधुनिक युग की आवश्यकता को देखते हुए, अनुचित तो नहीं कहा जा सकता है किन्तु इन विषयों के साथ ऐसे विषय रखे जाने चाहिए जो मानवता का आदर्श प्रस्तुत करते हों।

8- सराहनीय प्रयास → प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था का वर्तमान भारतवर्ष में पुनरुत्थान करने के लिए प्रयास आवश्य किया जा रहा है। गुरुकुलों की पुनः स्थापना, शान्ति निकेतन, वनस्थली विद्यापीठ जैसी शिक्षण संस्थाओं को प्रारम्भ करना, संस्कृति पाठशालाओं के संरक्षण तथा निरीक्षण हेतु पृथक प्रबंध करना आदि कार्य इस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं।

Scanned with CamScanner